विद्यार्थियों को रचनात्मक रूप से व्यस्त रखना एक कला, एक संस्कृति

श्रीदेवी

स्कूल से जुड़ी ग़ैर-अकादमिक व्यस्तताओं के चलते कई बार शिक्षक कक्षा में पूरा समय नहीं दे पाते। ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिए एक स्कूल के शिक्षकों ने सोचा कि क्यों न बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों की मदद ली जाए। इस मदद के लिए उन्होंने विद्यार्थियों से बात भी की, और उन्हें सक्षम भी बनाया कि वे छोटी कक्षा के विद्यार्थियों की मदद कैसे कर सकते हैं। यह लेख इन बिन्दुओं को भी पुख़्ता करता है कि विद्यार्थी एक दूसरे की सीखने में मदद कर सकते हैं। इस तरह एक दूसरे की सीखने में मदद करने की प्रक्रिया में वे ख़ुद भी सीखते हैं। -सं.

सरकारी विद्यालय में शिक्षकों के पास कक्षा में शिक्षण के साथ-साथ कई सारे ग़ैर-शिक्षकीय कार्य भी होते हैं। इन कार्यों में आमतौर पर मध्याह्न भोजन के दस्तावेज़ जमा करना, बैंक जाना, और चुनाव का वर्ष है तो बीएलओ का कार्य, यूडाइस डाटा अपलोड करने जैसे कार्य शामिल हैं। शिक्षक जब तक कक्षा में होते हैं, विद्यार्थी उनके द्वारा दिए गए कार्यों को करते रहते हैं। जैसे ही शिक्षक कक्षा से निकलकर दूसरे कार्य कर रहे होते हैं, कक्षा में कोहराम मचने लगता है।

एक सरकारी विद्यालय के शिक्षक इसी बात का समाधान खोज रहे थे कि शिक्षक की अनुपस्थिति में भी विद्यार्थियों को रचनात्मक रूप से व्यस्त कैसे रखा जाए। पहला समाधान यह सोचा गया कि छोटी कक्षाओं में बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों की दो टोली बनाकर भेजी जाएँ जो छोटी कक्षा के विद्यार्थियों को कोहराम मचाने से रोकें। अतः बड़े विद्यार्थियों की दो टोलियाँ छोटी कक्षाओं में गईं। बड़े विद्यार्थियों के पास इन विद्यार्थियों को चुप रखने के तो निर्देश थे पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि इन्हें चुप कैसे कराएँ। इसलिए बड़ी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी छड़ी लेकर कक्षा में घूमने लगे। कभी-कभी वे छोटे विद्यार्थियों को एक-दो छड़ी लगा भी देते। इससे छोटी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी शिक्षकों के पास उन विद्यार्थियों की शिकायतें लेकर पहुँचने लगे।

शिक्षकों के लिए यह एक नई तरह की मुश्किल थी। विद्यालय में सज़ा और पिटाई तो

चित्र : प्रशांत सोनी

होनी ही नहीं चाहिए। इसका हल खोजने के लिए इस मुद्दे पर बड़े विद्यार्थियों से बातचीत की गई कि वे शिक्षक की अनुपस्थिति में जब भी कक्षा में जाएँगे तब क्या काम करेंगे।

चित्र : प्रशांत सोनी

सभी शिक्षकों ने मिलकर विचार किया कि ऐसे क्या-क्या काम हो सकते हैं जो ये बड़े विद्यार्थी छोटे विद्यार्थियों को करवा सकें। साथ ही बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों की तैयारी का भी सवाल था, और उसके लिए बड़ी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के साथ एक अलग स्तर पर कार्य करना था। इसके बाद बड़े विद्यार्थियों से यह बातचीत हुई कि वे क्या-क्या काम कर सकते हैं। पता चला कि वे बहुत-से काम कर सकते हैं। मसलन, कुछ विद्यार्थी पढ़ सकते थे, मन से लिख सकते थे, चित्र बना सकते थे, आदि। फिर उनसे पूछा गया कि जिस तरह से तुम मन से लिखते हो, चित्र बनाते हो, क्या यही कार्य अपने विद्यालय में पढ़ने वाले छोटी कक्षा के विद्यार्थियों से करवा सकते हो? आपको अगर उनसे कुछ लिखवाना हो, आप क्या-क्या करोगे? इन सवालों पर चर्चा की गई। विद्यार्थियों ने बताया कि वे चित्र बनाएँगे, शब्द लिखेंगे, और फिर छोटे विद्यार्थियों से पढ़ने के लिए कहेंगे।

शिक्षकों ने सुझाया कि विद्यार्थियों को बात करना पसन्द है। क्या कक्षा में गतिविधि करने के लिए बातचीत का कोई ऐसा खेल दिया जा सकता है जिसे हम पहले बड़े विद्यार्थियों को सिखाएँ, और वे अपने छोटे दोस्तों के साथ कर पाएँ?

बड़ी कक्षा के विद्यार्थी छोटे विद्यार्थियों से उनके द्वारा पढ़ी गई कविता या कहानी पर चर्चा करें, और उन्हें चिन्तन के प्रश्न दें। वे अपने बनाए कुछ चित्रों और पढ़ी हुई कहानी पर विचार करें। शिक्षकों के द्वारा समय-समय पर किए जाने वाले रचनात्मक कार्यों को भी बड़ी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सहयोग से दूसरी कक्षाओं में किया जा सकता है। जैसे–

1. आज हम आइसक्रीम पर बात करेंगे। किस-किस को आइसक्रीम खाना पसन्द है, और क्यों? आइसक्रीम का एक चित्र बनाएँगे। पिछली बार आपने आइसक्रीम कब खाई थी? इसपर बात कर सकते हैं;
2. आज हम अन्त्याक्षरी खेलेंगे, और अपने-अपने बोले गए शब्दों को लिखेंगे;
3. आज किताब के चित्रों पर बात करेंगे;
4. आज हम अपनी एक कविता सुनाएँगे; आदि।

बड़े विद्यार्थियों ने इस तरह के काम छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ किए। इन गतिविधियों से विद्यालय में छड़ी से पिटाई पूरी तरह से समाप्त हुई, और सीखने-सिखाने का माहौल बनने लगा। इस प्रक्रिया में छोटे विद्यार्थी कम और बड़े विद्यार्थी ज़्यादा सीखने लगे। शिक्षक जब कक्षा में होते वे किताब पढ़ाते, और जब नहीं होते बड़े विद्यार्थी छोटी

कक्षाओं में शिक्षकों के द्वारा बताई गईं गतिविधियाँ करवाते। इनमें किसी खेल को कक्षा में खेलना और उसके बारे में लिखना, किसी अभ्यास पत्रक को पूरा करना, कविता गाना, आदि गतिविधियाँ शामिल थीं। इन गतिविधियों को नियमित रूप से करने के कारण बड़ी कक्षा के ऐसे विद्यार्थी भी पढ़ना सीखने लगे जिन्हें ज़्यादा पढ़ना नहीं आता था। इस तरह, छोटे विद्यार्थियों के साथ काम करने से बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में भी सुधार हुआ। इस प्रक्रिया के कारण कक्षा चार और पाँच के 35 में से लगभग 25 विद्यार्थी पढ़ना सीख गए थे। उनका ख़ुद के प्रति विश्वास बढ़ा, और वे छोटे विद्यार्थियों के साथ बातचीत करना सीख पाए।

विद्यार्थी चाहे जिस परिवेश में रहते हों उनपर उनके आसपास की घटनाओं का सीधा प्रभाव पड़ता है। यह बात हम सब बेहतर तरीक़े से जानते हैं। इन घटनाओं का विद्यार्थी क्या अर्थ निर्मित करते हैं, ये इस बात पर निर्भर करता है कि उनके आसपास के वयस्क, उनके दोस्त, आपस में क्या और किस तरह की बात करते हैं।

इस बारे में विचार करने पर मुझे लगा कि विद्यार्थी चाहे जिस परिवेश में रहते हों उनपर उनके आसपास की घटनाओं का सीधा प्रभाव पड़ता है। यह बात हम सब बेहतर तरीक़े से जानते हैं। इन घटनाओं का विद्यार्थी क्या अर्थ निर्मित करते हैं, ये इस बात पर निर्भर करता है कि उनके आसपास के वयस्क, उनके दोस्त, आपस में क्या और किस तरह की बात करते हैं। जो व्यवहार विद्यार्थियों के साथ होता है, ज़्यादातर विद्यार्थी उसी व्यवहार को रिपीट करते हैं। विद्यालयों में शिक्षकों का ज़्यादातर समय इस बात को सुलझाने में निकल जाता है कि किसने, किसको और क्यों मारा; किसकी किताब या पेंसिल किसने ले ली है; आदि। इन मुद्दों को सुलझाने का कोई मानक तरीक़ा नहीं है। इसके लिए एक सुलझे हुए व्यक्ति की तरह विद्यार्थियों से लगातार बात करते रहना ज़रूरी है। इन सबमें बुनियादी मसला यह भी है कि हम शिक्षक इन समस्याओं के बारे में क्या और कितना जानते हैं; इन मुद्दों की वजहें कहाँ हैं; क्या ये वजहें उस तत्काल हुए मसले में हैं या हमारे सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में ही कहीं निहित हैं?

इसके साथ ही यह भी कि कक्षा में किसी घटना के होने के बाद शिक्षक के निर्णय पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। शिक्षक भी कक्षा में हुए किसी विवाद पर जल्दी-से-जल्दी अपना निर्णय सुनाकर उस बात को समाप्त कर देना चाहते हैं। शिक्षकों की अपनी तल्लीनता है। उनकी भी कुछ तय ज़िम्मेदारियाँ हैं। कक्षा में भाषा, गणित और पर्यावरण का अध्यापन ज़्यादा ज़रूरी है। इसके साथ-साथ हम विद्यार्थी को एक अच्छा सोचने-समझने वाला इंसान भी बनाना चाहते हैं। आज का स्कूल का यह विद्यार्थी कल का एक नागरिक है। उसके सामने विद्यालय और समाज से जिस तरह के व्यवहार बार-बार सामने आएँगे, और उसके साथ जिस तरह का न्याय होगा वे उसे ही अपना बुनियादी विश्वास बनाएँगे।

श्रीदेवी ने पण्डित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर से साहित्य और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। पिछले पन्द्रह वर्षों से प्राथमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। प्रमुख रूप से शिक्षक-शिक्षा, बाल साहित्य, और प्रारम्भिक साक्षरता में रुचि है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रायपुर (छत्तीसगढ़) में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : sreedevi@azimpremjifoundation.org